26 अगस्त, 2015 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में वास्तुकला परिषद द्वारा आर्किटेक्ट्स लोगो डिजाइन के विजेता को पुरस्कृत करने तथा अंडर ग्रेजुएट एंड पोस्ट ग्रेजुएट थीसिस अवार्ड प्रदान किए जाने के लिए आयोजित समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

वास्तुकला परिषद द्वारा आर्किटेक्ट लोगो डिजाइन प्रतिस्पर्द्धा के विजेता को पुरस्कृत करने तथा अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को वास्तुकला संबंधी शोध प्रबंध में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय फाइनल ज्यूरी अवार्ड प्रदान किए जाने के लिए आयोजित इस समारोह में आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है । मैं वास्तुकला परिषद को वास्तुकारों की पहचान के लिए एक लोगो तैयार करने की पहल करने के लिए बधाई देती हूं । मैं उन सब अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को भी बधाई देती हूं जिनके शोध प्रबंध को पुरस्कार के लिए चुना गया है । मैं आपके व्यावसायिक करियर में सफलता की कामना करती हूं । अब आप लोगों पर यह दायित्व है कि आप वास्तुकला के विकास और राष्ट्र निर्माण में सार्थक सहयोग दें ।

मित्रो, वास्तुकला का नगरों और शहरों के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है । आमतौर पर यह माना जाता है कि आधुनिक वास्तुकला व्यवसाय की शुरूआत 19वीं शताब्दी के मध्यकाल में हुई । किंतु हम जानते हैं कि वास्तु विद्या अथवा शिल्प शास्त्र इतना पुराना है जितना हमारी सभ्यता का इतिहास । वास्तु शास्त्र वास्तुकला का प्राचीन भारतीय ज्ञान है । अधिकांश लोग जानते हैं कि भगवान विश्वकर्मा को "देवशिल्पी" अथवा "देवों के वास्तुकार" के रूप में जाना जाता है और उन्हें त्रिलोक का एकमात्र वास्तुकार और शिल्पी माना जाता है। महाभारत में विश्वकर्मा का परिचय "कला के गुरू और सहस्र हस्तशिल्पों के कर्ता" के रूप में दिया गया है । इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमारे देश के विभिन्न भागों में और विशेषकर कारखानों और औद्योगिक परिसरों में 17 सितम्बर विश्वकर्मा दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस दिन इन परिसरों के स्वामी और कर्मचारी अपने प्रतिष्ठानों के सुचारू कामकाज के लिए भगवान विश्वकर्मा की आराधना करते हैं ।

अथर्ववेद में भवन के विभिन्न भागों अर्थात् बैठक, अंतःभाग, अग्नि के लिए अलग स्थान, पशुओं के लिए बाड़े और स्वागत कक्ष का उल्लेख किया गया है । कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी नगर योजना किला बंदी और सिविल प्रकृति के अन्य इमारतों का उल्लेख मिलता है ।

हमारे देश में वास्तुकला हमारी सभ्यता और संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । समस्त भारत वर्ष में अलग-अलग वास्तुकला से बने प्राचीन भव्य मन्दिर, किले, राजमहल एवं अन्य इमारतें आज भी विश्व में भारत की अद्भुत वास्तुकला को प्रतिबिम्बित करते हैं । इनको देखने, पढ़ने व समझने हर वर्ष देश-विदेश से हजारों लोग हर रोज आते हैं । प्राचीन भारत में देश के कोने-कोने में उच्च स्तर के वास्तुकला वाले मंदिरों की स्थापना की गई । समय के साथ भारतीय वास्तुकला के क्षेत्र में प्रगति हुई और विश्व के अन्य क्षेत्रों के साथ भारत का संपर्क होने के परिणामस्वरूप इस कला में अनेक प्रणालियों के प्रभाव का समावेश हुआ जिससे आधुनिक वास्तुकला इमारतों पर पारम्परिक वास्तु शास्त्र का अत्यधिक प्रभाव पड़ा । जैसा कि हम सब जानते हैं, सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की सर्वाधिक विकसित शहरी सभ्यताओं में से एक है जो ईंटों, सड़क के किनारे बनी निकासी प्रणाली और बहु मंजिले घरों वाले शहरों के कारण सुप्रसिद्ध है जैसा कि हड़प्पा और मोहन जोदड़ो से मिले अवशेषों से पता चलता है । स्नानागार और शौचालय बहुत उन्नत थे, सिंधु घाटी सभ्यता अपनी असाधारण नगर योजना और वास्तुकला के लिए भी सुप्रसिद्ध है ।

मित्रो, भारत मंदिरों का देश है । प्राचीन और मध्य काल के दौरान निर्मित मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला और शिल्प कला के कारण विख्यात हैं । पत्थर काटकर बनाई गई संरचनाएं, एक पत्थर से बनी संरचनाएं, स्तूप सहित निर्मित मंदिर जिनके अपनी विभिन्न वास्तुशिल्पीय विशेषताएं हैं जैसे अनेक प्रकार के मंदिर हैं । जैसा कि सर्वविदित है मंदिर वास्तुकला भारत में सम्राटों और शासकों के संरक्षण में समृद्ध हुई । गुप्तकाल के दौरान हमें प्रस्तर निर्मित मंदिरों के अनेक श्रेष्ठ उदाहरण मिलते हैं । मैं यह उल्लेख करना चाहता हूं कि अहिल्याबाई होल्कर, वाराणसी में विश्वनाथ मंदिर और द्वारका में सोमनाथ मंदिर जैसे मंदिरों की महान संरक्षक थीं । आधुनिक काल में हमारे पास ताजमहल, राष्ट्रपति भवन और हमारे संसद भवन जैसी इमारतें हैं जो कि हमारी विरासत और वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । जिस बात पर मैं बल देना चाहती हूं वह यह है कि भारत में वास्तुकला का समृद्ध इतिहास है और खजुराहो तथा कोणार्क जैसी मंदिर संरचनाएं उस उत्कृष्टता को दर्शाती हैं जिसमें हमारे शिल्पकारों ने लंबे समय में दक्षता प्राप्त की थी ।

मित्रो, वास्तुकार रचनात्मक कलाकार और डिजाइन निर्माता होते हैं । वे आमतौर पर परदे के पीछे कार्य करते हैं और हम केवल उनकी कृतियों का अवलोकन करते हैं । वे निर्माण क्षेत्र से जुड़े विभिन्न ठेकेदारों और परियोजनाओं के साथ जुड़ी विशिष्ट एजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित करते हैं । आज, विशेष रूप से सतत विकास पर अधिक बल दिए जाने के संदर्भ में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है । तेजी से हो रहे शहरीकरण और उसके परिणामस्वरूप, सामने आ रहे दुष्परिणामों के साथ "हरित वास्तुकला" जो कि प्रकृति में पर्यावरण के अनुकूल और सतत है को बढ़ावा दिए जाने की अत्यन्त आवश्यकता है ।

यहां यह उल्लेख किए जाने की आवश्यकता है कि शहर हर देश विशेष रूप से भारत जैसे एक विकासशील देश की अर्थव्यवस्था के लिए विकास के अग्रदूत हैं । 2011 की जनगणना के अनुसार देश की लगभग 31 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती है और सकल घरेलू उत्पाद में उसका योगदान 63 प्रतिशत है । बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण शहरों में लोगों को और निवेश को आकृष्ट करने के लिए आज शहरों में जीवन स्तर में सुधार लाने की अति आवश्यकता है । इसे ध्यान में रखते हुए ही हमारी सरकार ने पूरे भारत में स्मार्ट सिटी निर्माण हेतु पहल की है । वैज्ञानिक योजना पर आधारित निर्माण के साथ-साथ पेयजल की उपलब्धता, बिजली की निश्चित आपूर्ति, सौर ऊर्जा का अधिक उपयोग, वर्षा जल संचयन, परिवहन, स्वच्छता और सतत विकास आदि स्मार्ट सिटी की प्रमुख विशेषताएं होंगी । स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत 2015-16 से 2019-2020 के बीच की पांच वर्ष की अवधि में 100 शहरों में काम किया जाएगा । यह वास्तव में एक प्रशंसनीय कदम है और मुझे लगता है कि इस मिशन के सफलतापूर्वक डिजाइनिंग और कार्यान्वयन में वास्तुकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी ।

वास्तुकार न केवल संरचना के डिजाइन का सौन्दर्य बढ़ाते हैं बल्कि एक सुखद अनुभूति का अहसास भी कराते हैं। उन्हें घरों, शैक्षणिक संस्थानों, कार्यालयों आदि का डिजाइन इस तरह से करना चाहिए कि ये भवन अपने आप में इन का उपयोग करने वालों के अनुकूल हों । ये इस तरह से डिजाइन किए जाने चाहिए कि भवन में प्रवेश करते ही एक सकारात्मक उर्जा का अनुभव हो । मेरे विचार से अब समय आ गया है कि भवनों का निर्माण करते समय हम अपने प्राकृतिक वातावरण को ध्यान में रखें ।

मुझे यह जानकर खुशी है कि वास्तुकला परिषद वास्तुकला के स्तर को ऊंचा उठाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । मुझे बताया गया है कि वर्तमान समय में भारत में 70,000 वास्तुकार हैं । भारत में 385 संस्थानों में वास्तुकला संबंधी शिक्षा प्रदान की जाती है तथा वास्तुकला परिषद द्वारा उनकी निगरानी की जाती है । हमारी अर्थव्यवस्था के आकार और लोगों की जरूरतों को देखते हुए स्थापत्य कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु और स्कूल होने चाहिएं । आज तो एक योग्य वास्तुकार के लिए कोई सीमा नहीं है और उसे अपनी प्रतिभा दिखाने के पर्याप्त अवसर हैं । एक बार वास्तुकला में स्नातक हो जाने पर वास्तुकार नगर प्लानिंग, लैंडस्केप डिजाइन, बिल्डिंग प्रिवेंशन, एनवायरमेंट डिजाइन, कंस्ट्रशन मैनेजमेंट, ट्रांसपोर्ट प्लानिंग, रियल एस्टेट डेवलपमेंट आदि जैसे संबद्ध किंतु विविध क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है । में शिक्षा का उच्च स्तर और कार्य कर रहे वास्तुकारों द्वारा अपनाए जाने वाले पेशे का उच्च स्तर बनाए रखने के लिए वास्तुकला परिषद की सराहना करती हूं ।

समरंग सूत्रधार में कहा गया है :-

- स्थपतिः स्थापनार्हः स्वात सर्वशास्त्रविशारदः

यानी एक वास्तुकार को सिर्फ वास्तुकला ही नहीं, अपितु सभी संबंधित विषयों में पारंगत होना चाहिये ।

मुझे विश्वास है आप सभी मेहनत, लगन और निष्ठा से काम करेंगे और हमारी स्वर्णिम इतिहास वाली भारतीय वास्तुकला को एक नई ऊँचाई एवं पहचान देंगे ।

मैं, एक बार फिर वास्तुकला का लोगो जारी करने हेतु वास्तुकला परिषद की सराहना करता हूं जो एक वास्तुकार को पहचान और वास्तुकार समुदाय को अपनत्व का भाव प्रदान करेगा । मैं इस अवसर पर लोगो डिजाइन प्रतिस्पर्धा के विजेता को बधाई देती हूं । मैं उन सभी अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को भी बधाई देती हूं जिनकी थीसिस का चयन पुरस्कार हेतु किया गया था । मैं उनके प्रयासों की सफलता की कामना करती हूं । मैं श्री उदयगिरि गडकरी जी को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया और आप सबसे बातचीत करने का अवसर प्रदान किया ।

धन्यवाद ।